482 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
तृतीय अंक
अक्टूबर 2018

इस अंक में...

11 सम्पादकीय
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
26 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
35 नवीनतम सामान्य ज्ञान
41 प्रमुख व्यक्तित्व एवं उनके महत्वपूर्ण योगदान
43 रोजगार समाचार
46 18वें एशियाई खेल : जकार्ता-पालेमबांग 2018
52 खेलकूद
55 राज्य समाचार
56 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
58 कॅरियर लेख—सिविल सेवा परीक्षा : चुनौती स्वीकार करें और ईमानदार प्रयास के साथ दें अपना सर्वश्रेष्ठ
60 युवा प्रतिभाएं
69 स्मरणीय तथ्य
72 विश्व परिदृश्य
77 फोकस—भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली की दशा और दिशा
82 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
85 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
88 आर्थिक लेख—वैश्विक निर्देशांकों में भारत
90 ऐतिहासिक लेख—(i) बिहार के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी
94 (ii) भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम (1857) : भूले-बिसरे चित्र
96 सामाजिक न्याय लेख—नक्सलवाद : समस्या एवं समाधान
99 समसामयिक संवैधानिक लेख—निजता का अधिकार *बनाम* मौलिक अधिकार : एक समीक्षा
102 समसामयिक लेख—हिन्दी और भारतीय भाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध : एक विवेचना
105 कॅरियर लेख—एस.एस.बी. : सेना के तीनों अंगों के लिए क्या ? क्यों ? और कैसे ?
109 बिहार लोक सेवा आयोग : 64वीं संयुक्त राज्य सिविल सेवा परीक्षा—2018
115 पर्यावरण लेख—प्लास्टिक प्रदूषण और उसका निराकरण
119 वन-विज्ञान लेख—भारत में वन पर्यावरण का वितरण
121 कृषि लेख—भारतीय कृषि : 'जीएम' फसल से जैविक फसल ज्यादा उपयोगी
123 क्षेत्रीय संगठन लेख—शंघाई सहयोग संगठन और भारत
126 समसामयिक लेख—डीएनए प्रौद्योगिकी (उपयोग एवं अनुप्रयोग) विनियमन विधेयक—2018
128 सार संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

132 (i) बैंक ऑफ इण्डिया—क्रेडिट अधिकारी परीक्षा, 2018
135 (ii) राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित उद्योग निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा, 2018
140 (iii) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य) परीक्षा, 2017
151 (iv) केन्द्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक (पी.जी.टी.) भर्ती परीक्षा, 2017
157 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
159 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
162 ऐच्छिक विषय— (i) हिन्दी—नवोदय विद्यालय समिति प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2016
169 गृह विज्ञान—यू.जी.सी-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2018
179 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18—(i) अंतरिक्ष के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
181 (ii) ग्रामीण विकास के क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, आजीविकोपार्जन एवं रोजगार सृजन के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में
184 तर्कशक्ति—आई.डी.बी.आई. एक्जीक्यूटिव परीक्षा, 2018
189 संख्यात्मक अभियोग्यता—बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2017
196 आंकिक क्षमता—स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रोबेशनरी ऑफीसर्स (प्रा.) परीक्षा, 2018
200 क्या आप जानते हैं ?
201 अपना ज्ञान बढ़ाइए
202 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—187
205 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—अदालतों में लम्बित मुकदमों की बढ़ती संख्या के बीच ग्राम न्यायालयों का महत्व
207 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—471 का परिणाम
208 English Language—State Bank of India Probationary Officers (Pre.) Exam., 2017

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

संशय रहित बनिए और कर्तव्य कर्म का निर्धारण कीजिए

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है. वैचारिक चौराहे पर खड़े ऐसे व्यक्तियों के लिए सही एवं वांछित मार्ग चुनना कठिन हो जाता है. ऐसे अवसरों पर व्यक्ति का स्व-विवेक ही सबसे बड़ा मार्गदर्शक होता है.

प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कर्त्तव्याकर्त्तव्य-निर्धारण सम्बन्धी इस प्रकार की द्विविधा के अवसर आ जाना सर्वथा स्वाभाविक है.

द्विविधापूर्ण संकट उत्पन्न करने वाले अवसरों को लक्ष्य करके कवियों ने अन्तर्द्वन्द्व के मनोहारी वर्णन किए हैं. विदेश-गमन के लिए तैयार पति अपनी पत्नी से औपचारिक विदाई माँगता है. पत्नी के उत्तरस्वरूप भारतेन्दु ने कई छंद लिखे हैं. केवल दो पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं जो पत्नी की मानसिक उलझन के प्रति इंगित करती हैं–

रोकहुँ जो तो अमंगल होइ,
सनेह नसै कहौं पिय जाइए।

\+ + +

तासों पयान समै तुम्हरे
हम कहा कहैं, आप हमें समुझाइए।

भारत के महान् काव्य-ग्रन्थ महाभारत में कर्त्तव्याकर्त्तव्य-सम्बन्धी मूढ़ता के उदाहरण भरे पड़े हैं. इनके समाधान के आदि सभी कुछ रचे गए हैं.

युद्ध में मारे गए अपने प्रियजन का श्राद्ध करते समय धर्मराज युधिष्ठिर के मन में भारी मोह उत्पन्न हुआ था. उनके इस मोह को दूर करने के लिए महाभारत के 'शांति पर्व' का कथन किया गया.

कोरियो नेकस इस प्रकार की द्विविधापूर्ण मनोदशा का उद्घाटन करने वाले ग्रन्थों के नायक है डैनमार्क का राजकुमार हैमलेट. राजकुमार के मन में यह अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है कि वह अपने पापी चाचा का वध करके पुत्र धर्म के अनुसार अपने पिता की हत्या का बदला ले अथवा अपने चाचा-राजसिंहासन पर विराजमान राजा पर दया करे. इस दुविधा अथवा मोह में फँस जाने के फलस्वरूप हैमलेट की मानसिक दशा दयनीय हो जाती है, उचित मार्ग-दर्शन के अभाव में वह पागल हो जाता है और अन्त में 'जिऊँ या मरूँ' इस दुश्चिंता द्वारा ग्रसित होकर उसके जीवन का अन्त हो जाता है. हिन्दी के नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का अच्छा चित्रण करते हैं.

जीवन में ऐसे अवसर प्रायः उपस्थित होते हैं जब दो विरोधी धर्म कर्त्तव्य-कर्म सम्बन्धी मूढ़ता उत्पन्न कर देते हैं. इस मोह की स्थिति एवं उसके निवारणार्थ उपायों का वर्णन करने वाले अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं.

युद्ध स्थल में अर्जुन के मन में मोह उत्पन्न होने का उदाहरण सर्वाधिक प्रसिद्ध है. इसको लक्ष्य करके गीता का उपदेश दिया गया. सबका निष्कर्ष है कि जो कुछ करो शुद्ध कर्त्तव्य भाव से करो. स्वार्थ-बुद्धि रहित निर्णय सदैव शुभ फलदायक होगा. अपने को निमित्त मात्र (Outer Cause) समझो.

यथा–

तस्मात्वमुक्तिष्ठ यशो लभस्व,
जित्वा शत्रून्भुङ्स्व राज्यं समृद्धम्।
मथैवैते निहिता पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् *(11/23)*

अर्थ–अतएव तू उठ! यश प्राप्त कर और शत्रुओं को जीत कर धन-धान्य से सम्पन्न राज्य को भोग. ये सब शूरवीर पहले से ही मेरे द्वारा मारे हुए हैं. हे सव्य साचित्, अर्जुन, तू तो केवल निमित्तमात्र (Outer Cause) बन जा.